Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हरियाणा के हिन्दी साहित्य में भिवानी जनपद के साहित्यकारों का तथ्यों की दृष्टि से अवदान।

डॉ. नवीन
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत

भूमिका

साहित्य किसी भी समाज, प्रदेश या देश के जनमानस की भावनाओं का जीवंत दर्पण होता है। यह समयानुसार बदलते सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक परिवेश की सहज प्रतिक्रिया के रूप में निर्मित होता है। भिवानी जनपद पूरे भारत में अपनी वीरता, साहस, प्रकृति प्रेम, सामाजिक सुधार, तपस्या, दानशीलता, और नारी जाति के प्रति आदरभाव के लिए जाना जाता है। यहाँ की साहित्यिक धारा भावों और विचारों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण रही है। इस क्षेत्र में लेखकों ने महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीत, गजल, निबंध, नाटक, लघुकथा, आलोचना और पत्रकारिता जैसे विभिन्न साहित्यिक रूपों को अपनाकर जीवन के गूढ़ पक्षों को उजागर किया है। भिवानी जनपद का साहित्य सामाजिक, धार्मिक, प्राकृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक भावभूमि पर आधारित है, जो भावों की विविध परतों को हमारे सामने लाता है। इन रचनाओं में समाज की मान्यताओं, परंपराओं, विश्वासों और लोकाचारों की स्पष्ट झलक मिलती है, जिन्हें साहित्यकार दर्पण की भाँति पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के लेखक मानव मूल्यों की गहरी समझ रखते हैं और उनके लेखन में देशभक्ति की भावनाएँ प्रमुखता से उभरकर आती हैं। इस अध्याय में हम भिवानी क्षेत्र की साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण करेंगे, जिसमें भावों की विविधता और उनकी अभिव्यक्ति की कलात्मकता को ध्यान में रखा जाएगा।

मुख्य शब्दः साहित्य, समाज और संस्कृति, क्षेत्रीय साहित्य, भिवानी जनपद, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना, प्रकृति प्रेम, नारी सम्मान, सामाजिक सुधार, साहित्यिक विधाएँ, लोकजीवन।

साहित्य में भाव का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक सृजन का आधार ही भाव है, जो लेखक की कल्पना और संवेदना से उत्पन्न होता है। एक रचनाकार अपने हृदय में उठते विचारों, अनुभूतियों, कल्पनाओं और संवेदनाओं को भाषा, बिंब, प्रतीक और अन्य कलात्मक साधनों से व्यक्त करता है। यह प्रक्रिया बिल्कुल वैसी ही है जैसे एक कुशल मिस्त्री विभिन्न निर्माण सामग्री से सुंदर भवन बनाता है। इसी प्रकार साहित्यिक शिल्पी भाव, विचार, कल्पना, करुणा, कोमलता और वैचारिक प्रवाह के माध्यम से उत्कृष्ट रचनाएँ प्रस्तुत करता है। इस भावभूमि पर आधारित रचनाकारों में गोस्वामी तुलसीदास, कबीर, सूरदास, बिहारी, निराला, तुलसीराम शर्मा दिनेश, डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' और माधव कौशिक जैसे महान कवियों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के नाम उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने हिन्दी साहित्य को भावों की गहराई और सौंदर्य प्रदान किया है।

सामाजिक पक्ष

प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम.एल. गुप्ता के अनुसार, मनुष्य मूलतः एक सामाजिक प्राणी है, जिसे सामान्य और संतुलित जीवन जीने के लिए समाज की आवश्यकता होती है। अकेलेपन में या पूर्णतः निर्जन स्थान पर रहकर कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं कर सकता। सामाजिक संबंध, आपसी संवाद और पारस्परिक सहयोग मानव जीवन के आवश्यक तत्व हैं, जो उसकी चेतना, विचारधारा और व्यवहारिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इसीलिए समाज मनुष्य के लिए केवल एक समूह नहीं, बल्कि उसका सह–अस्तित्व है। "मनुष्य का अस्तित्त्व भी अनिवार्य है," श्री कैलाश नाथ जेतली ने कहा था। मानव और समाज व्यक्ति और समाज एक–दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। समाज का अस्तित्व व्यक्ति के बिना अधूरा है, और व्यक्ति भी समाज के बिना पूर्ण जीवन नहीं जी सकता। यही कारण है कि समाज को सर्वव्यापी माना गया है। कवियों और रचनाकारों की चेतना समाज में घटित घटनाओं से गहराई से प्रभावित होती है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है। मानव जीवन सामाजिक परिवर्तनों, राजनीतिक परिस्थितियों और सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित हुए बिना आगे नहीं बढ़ सकता। व्यक्ति और समाज के बीच का संबंध केवल एकतरफा नहीं, बल्कि पारस्परिक होता है, जिसमें दोनों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है और एक–दूसरे की आवश्यकता अनिवार्य होती है। साहित्य को समाज का दर्पण इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सामाजिक यथार्थ को संवेदनशीलता के साथ उजागर करता है। मानव सभ्यता के प्रारंभिक विकास का केंद्र गाँव रहा है, जहाँ जीवन की सहजता, पारस्परिक सहयोग, और सांस्कृतिक एकरूपता प्रमुख रही है। ग्रामीण समाज की विशेषताएँ जैसे सहज व्यवहार, संतुलित जीवनशैली, पारंपरिक पोशाकें, और सुख–दुख में भागीदारी आज भी उसकी पहचान हैं। हालाँकि, वैज्ञानिक प्रगति और आधुनिकता ने गाँवों को प्रभावित किया है, फिर भी उनकी मूल आत्मा और सांस्कृतिक जड़ें यथावत बनी हुई हैं। कवि का हृदय गाँव के शांत वातावरण और प्रकृति की गोद में उगते सूरज को देखकर सहज ही पुलकित हो उठता है, जो उसकी रचनात्मक संवेदना का प्रेरणास्रोत बनता है।

गाँवों की भोर देख के मन भाव विभोर,
पेड़ों से मुंडेरों पर उड़ते हैं मोर।
मन्दिर की मधुर घंटियाँ हैं, मधुर कलरव है,
गीतांजलि गाता हो जैसे टैगोर ।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आज, भौतिकवादिता ने गाँवों का जीवन भी बदल दिया है। कवि ओमप्रकाश कादयान इस बदलाव की ओर संकेत करते हैं।

सूखे जोहड़ ताल–तलैया, अब तो बदल रहे हैं गाँव,
घटते जंगल, कटते दरखत, अनमने दिख रहे हैं गाँव।

अपनी कविता गाँव से प्रश्न में मदन गोपाल शास्त्री ने ग्रामीण संस्कृति में हुए बदलाव को उजागर करते हुए पूछा कि वृद्धों का नाच, वृक्षों की डालियों पर डले हुए झूले, कोथली लाने की प्रथा, चौपालों पर बच्चों और बूढ़ों की बैठक, पनघट पर युवतियों की भीड़ क्यों समाप्त हुई?

ओ मेरे प्यारे गाँव बतादे मुझकों
वह कहाँ तुम्हारा रूप पुराना चला गया।

कवि की आत्मा कहती है कि शहर, गाँव और नगर की जिंदगी पर भ्रष्टाचार, आंतकवाद और भौतिकवादिता का बुरा प्रभाव रहा है।

"नगर – नगर में, गाँव–गाँव में फैल रहा है आतंक,
मानवता के हत्यारे अब फिरते हैं निःशंक।

महानगरों में आर्थिक संसाधनों का वितरण अत्यंत असमान दिखाई देता है। एक ओर सम्पन्न वर्ग विलासिता में जीवन व्यतीत करता है, तो दूसरी ओर निर्धन वर्ग रोजमर्रा की रोटी के लिए भी संघर्ष करता है। यह विडंबना है कि जहाँ एक ओर धनी लोग अपने पालतू पशुओं को भी सभी सुख–सुविधाएँ प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर मानव स्वयं भूख से तड़पता हुआ जीवन समाप्त कर देता है। यह सामाजिक असंतुलन न केवल आर्थिक विषमता को उजागर करता है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के क्षरण की ओर भी संकेत करता है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक पक्ष

भिवानी जनपद के साहित्यकारों की रचनाओं में धर्म और धार्मिक गतिविधियों के प्रति गहरी आस्था स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। इनके साहित्य में धार्मिक भावनाएँ केवल आडंबर नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। ये रचनाकार सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखते हैं और उनके लेखन में सांप्रदायिक सद्भाव एवं वैश्विक एकता की भावना प्रबल रूप से परिलक्षित होती है। इनके काव्य और गद्य में गंगा, यमुना जैसे पवित्र नदियों का स्मरण, साधु–संतों की जीवनशैली, स्वर्ग–नरक की अवधारणाएँ, ऋषि–मुनियों की तपस्या, धार्मिक ग्रंथों का मंथन, तीर्थस्थलों का उल्लेख तथा भगवान के विविध रूपों और अनुष्ठानों का विशद चित्रण मिलता है। कवियों का धार्मिक दृष्टिकोण केवल किसी संप्रदाय तक सीमित नहीं, बल्कि वह समस्त मानवता के कल्याण की ओर उन्मुख होता है। उनके चिंतन की जड़ें मानवीय धर्म की अवधारणा में निहित हैं, जहाँ करुणा, सत्य, सेवा और

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सहिष्णुता जैसे मूल्यों को सर्वोच्च माना गया है। यही गुण उनके साहित्य को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि व्यापक मानवीय चेतना से संपन्न बनाते हैं।

मत पूछो– मैं कौन हूँ, क्या मेरी पहचान है।
मेरा मजहब प्यार और नाम इंसान है।

कवि हंस को इस बात का बहुत दुःख है कि वे आज धर्म से विचलित आडम्बरों का विरोध करते हैं।

आज धर्म के गोरे मुख पर राजनीति की चेचक फूटी
लक्ष्मी का दर्शन करते ही पण्डित से रामायण छूटी।

कवि हंस धर्म का सार दीन–दुखी की सेवा करना मानते हैं

मैं न मंदिर न मस्जिद गया, कोई पोथी न बांची कभी,
एक दुखिया के आँसू चूने, बस मेरी बंदिगी हो गई।

मजाक कवि मूलचंद मूल अपनी धार्मिकता में भक्ति भावना को शामिल करते हुए सगुण भक्ति को अधिक प्राथमिकता देते हैं। आप श्री राम, श्री कृष्ण और हनुमान के प्रशंसक हैं।

बाँटु तेरी सीरनी हनुमान,
तुलसीदास भाँति दास को, देओ दिखा भगवान।

डॉ. मुक्ता ने कहा कि ईश्वर ने मुझे मंदिर–मस्जिद में एक जैसा स्वरूप बताया है।

तुम हृदय – हृदय में बसते हो,
तुम काबा – वासी, कैलाशी हो।

सारस्वत मोहन मनीषी कहते हैं कि प्रभु भक्ति को ही अपना जीवन पद्धति मानते हैं।

जिसने चीर बढ़ाया कर दिया झूठ को चीर।
जग ढूंढे उस चीर को लिए नयन में नीर।

कवि भक्ति को दुकान बनाने पर व्यंग्य करते हैं

हम पुरखों के नाम पर चले रहे दुकान
नाम लिया भगवान का उड़ा रहे पकवान।

कवि हर धर्म की व्याख्या करते हुए कहते हैं

पूजा पद्धति भिन्न हैं सम्बन्धी मंजिल एक।
मंच सभी का एक ही नाटक भले अनेक।
धर्म स्थल तो बन गए धर्म कहाँ है यार।
गला करट प्रतियोगिता करते ठेकेदार।

हर धर्म की मूल भावना करुणा, प्रेम और मानवता के सिद्धांतों पर आधारित होती है। हिन्दू धर्म भी इन्हीं मूल्यों को केंद्र में रखता है, जहाँ सच्चा धर्म वही है जो दूसरों के दुःख में

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सहभागी बनता है। सच्चा धर्म न तो बाहरी प्रदर्शन है और न ही आडंबर या मिथ्याचार, बल्कि यह मानव सेवा के भाव से जुड़ा हुआ एक गहन अनुभव है। अध्यात्म का संबंध उस चेतना से है जो सीमाओं को लांघकर किसी दिव्य शक्ति से एकाकार होने की आकांक्षा रखती है। जब व्यक्ति इस अनुभूति से जुड़ता है, तो उसमें आत्मबोध और मानवीय चेतना का विकास होता है, जो उसे आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करता है।

आर्थिक पक्ष

पुराने समय से, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जीवन के चार आधार हैं। यदि अर्थ, धन और संपत्ति किसी को सम्पूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करती हैं, तो वह क्रूर, हिंसक, शैतान, हैवान और राक्षस बन जाती है। इसलिए संतों ने अर्थ से होने वाली बुराईयों को पहले ही समझा था। यही कारण है कि संतों ने धन को बार–बार हेय कहा है।

रैदास ने धन को दुखदायी कहा है
धन जोवन हरी न मिले, दुख दारुन अधिक अपार,
एक एक वियोगियाँ ताकों जानै सब संसार।

आज का युग धन की लालसा से इतना ग्रसित हो चुका है कि उसने मनुष्यता के मूल्यों को ही क्षीण कर दिया है। लोभ की इस अंधी दौड़ में न केवल आम जन, बल्कि वे लोग भी जो कभी सत्य, शांति और नैतिकता के प्रतीक माने जाते थे, अब भ्रष्टाचार के दलदल में फँसकर अपनी नैतिक दृष्टि खो बैठे हैं। जिनके भीतर कभी अटल विश्वास और आस्था होती थी, वे भी अब धन की चकाचौंध में अपनी आत्मा का सौदा करने पर मजबूर हो गए हैं। यह विडंबना ही है कि जो लोग कभी आचरण और ईमानदारी के प्रतीक थे, आज उन्हीं के पाँव भ्रष्ट व्यवस्था की धूल से गंदे हो गए हैं। ऐसे नैतिक पतन की स्थिति पर महाकवि नीरज जैसे संवेदनशील रचनाकारों ने भी चिंता प्रकट की है, जो समाज की आत्मा को झकझोर देने वाला यथार्थ है।

समय की झंकार ने ऐसा किया है छल समय से,
चातकों की प्यास तक बाजार में बिकने लगी है।
सूफियों पर भी नहीं गर्दन हुई जिसकी कभी कम
वह कलम कुछ कुर्सियों के सामने झुकने लगी है।

धन के सामने श्रद्धेय कवि डॉ. रमाकांत दीक्षित झुकते नहीं हैं। उनका आह्वान क्रांतिकारी है और समाज के लिए है।

कुछ सिक्कों में कलम बेच दूँ, मुझको यह स्वीकार नहीं।

धन और अर्थ की ताकत को बयान करते हुए वरिष्ठ कवि उदयभानु इस प्रकार हंसते हैं और भौतिक मयी दुनिया की कड़वी सच्चाई को उजागर करते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

धन दौलत हो तो सब हाथ मिलाने लगते हैं
पर दुख में छाया से भी घबराने लगते हैं
प्रबल प्रलोभन को ठुकरा देना है बड़ा कठिन
बहती गंगा में सब लोग नहाने लगते हैं।

श्री हंस की ये निरंतर पंक्तियाँ भारतीय समाज ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक व्यवहार पर भी सटीक हैं। महान लेखक प्रो० हरिश्चन्द्र वर्मा ने कहा,

काले धन ने पोल खोल दी, ढोंगी उजले वेश की।
ऋण करके घृत पीते शासक, घोटालों के राज में।

डॉ. महेन्द्र शर्मा सूर्य ने अपने गीत में स्विस बैंक के खातों की चर्चा करते हुए अनैतिकता और कुआचरण पर स्पष्ट रूप से टिप्पणी की है।

नेता भाग्य बना देश का, देश को गिरवी रख लेता,
अरबों के घोटाले करके, स्विस में खाता रख लेता,।।

डॉ. मुक्ता ने अपनी लघुकथा के मूलमंत्र में माननीय मूल्यों की गिरावट और अनैतिकता को आसानी से वर्णित किया है।

अभी थोड़ा इंतजार कर लेते हैं।
शायद नॉरमल डिलीवरी हो जाए।
सीनियर ने आदेश दिया, हमें अभी आप्रेशन करना है।
तुम्हारी देरी से हजारों का चूना लग सकता है।
यदि तुम इंतजार करते ही रहोगे तो जिंदगी भर भूखे मरते रहोगें।

मदन गोपाल शास्त्री ने कहा कि वे धन–संग्रह का विरोध करते हैं और स्वयं लोगों को लूटते हैं, उन तथा कथितों पर तेज तलवार की तरह शब्दों से वार करते हैं

धन संग्रह का ध्यान छोड़र अपरिग्रह अपनाने की,
शिक्षा देते वही लोग, जो चंदों से निज घर भरते।

युवा कवि डॉ० अनिल गौड़ भारतीय धन क विदेशों में जमा करवाने की प्रथा पर अपनी चिंता जताते हैं

कातिलों की जेल में रिहाई हो गई, दौलत वतन की पराई हो गई।

महान गजलकार सारस्वत मोहन मनीषी ने पारखी अंदाज में भाव सम्पदा के सागर को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

राजनीति पक्ष

डॉ. शाश्वत मोहन मनीषी अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

राजनीति की घोड़ी बिन लगाम नहीं होने देंगे।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सारे भारत को हरगिज आसाम नहीं होने देंगे।
हमने माँ का दूध पिया है पानी नहीं दिया है रे
एक दिवस भी कायरता का जीवन नहीं जिया है रे।

जब महाकवि भर्तृहरि ने राजनीति को वेश्या कहा था, तो हरियाणा के राज्यकवि उदयभानु हंस ने कहा कि धन बल राजनीति पर सबसे बड़ा प्रभाव डालता है और कहते हैं

धन बल भुजबल से चले, राजनीति का खेल
कुर्सी पाने के लिए सबको परे धकेल।

राजनीति का स्वरूप युगों से परिवर्तनशील रहा है—चाहे वह सतयुग की मर्यादा हो, द्वापर का छल–प्रपंच या कलयुग की वर्तमान राजनीति। किन्तु एक तथ्य जो सर्वदा समान रहा, वह है नैतिक मूल्यों का क्षरण। आज की राजनीति में आदर्शों की बजाय अवसरवादिता ने स्थान ले लिया है। सेवा, देशभक्ति, भाईचारा, त्याग और समर्पण जैसी भावनाएँ अब सत्ता की दौड़ में अप्रासंगिक हो गई हैं। इनके स्थान पर छल–कपट, विश्वासघात, धन की ताकत, गुटबाजी और झूठे आडंबर जैसे तत्व हावी हो गए हैं। राजनीतिक मंच अब लोकसेवा का नहीं, स्वार्थपूर्ति का साधन बन गया है, जहाँ नीति का स्थान केवल नाममात्र का रह गया है। इन विकृतियों को देखकर लगता है जैसे 'नीति' स्वयं राजनीति से निर्वासित हो चुकी है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने युग में इन विकृतियों की ओर संकेत करते हुए अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता और नैतिकता के बीच के अंतर को उजागर किया था। यही कारण है कि आज राजनीति में मूल्यहीनता का बोलबाला है और नीति के स्थान पर केवल स्वार्थ की साधना दिखाई देती है।

मुखिया मुख से चाहिए, खान पान सौ एक
पालहि पोषहि सकल विधि, तुलसी सहित विवेक।

राष्ट्रीय स्तर पर, हिन्दी गीत और रूबाई के पर्याय उदयभानु हंस के शब्दों में आज के युग की आपाधापी और मूल्यहीनता स्पष्ट दिखाई देती है, जो गोस्वामी जी के विचारों से विपरीत है।

राजा बैठे महल में खुद खाये अंगूर
कर प्रजा से भूख से मरने को मजबूर।

सारस्वत मोहन मनीषी ने आग के अक्षर काव्य–संग्रह में कुर्सियों की आड़ को कविता में उजागर करते हुए राजनीति की कई विसंगतियों पर प्रहार किया है।

देश पड़े चूल्हे में राष्ट्र जाए भाड़ में
खेलते शिकार सभी कुर्सियों की आड़ में
आ गया कुबेरों के घर में भी टोटा है

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सोने की चिड़िया का सोना सारा खोटा है।
दम नहीं रहा जरा भी शेर की दहाड़ में।

डॉ. अनिल कुमार गौड़ भी कश्मीर मुद्दे पर बोलते हुए राजनैतिक नेताओं को कौओं के नाम से अपना दुःख व्यक्त करते हैं।

उतर दक्षिण पूर्व पश्चिम गली–गली श्मशान हुए
जहाँ कभी बजती शहनाई वे रास्ते है वीरान हुए
सूरज चंदा की किरणों पर इसने कालिख पोती है
कौवों की पंचायत होती सूनी सड़के रोती है।

डॉ. गौड़ ने बाँगर भूमि काव्य संकलन में अपनी कविता सुभाष चाहिए में कहा

धर्म और राजनीति में भी गोना हो गया
आज मेरे देश को क्या टोना हो गया
खिलते गुलाबों पे भी लाली नहीं है
उजड़ा चयन कोई माली नहीं है।

राजनीति पर लेख लिखते हुए वरिष्ठ कवि महाबीर प्रसाद मधुय, हास्यकवि रघुवीर प्रसाद सरल, पूनम चंद वेणु, महेन्द्र कागजी, डॉ. महेश नक्श, विजेन्द्र गाफिल, माधव कौशिक, के. के. बासोतिया, डॉ. मनीषी, डॉ. मनोज भारत, डॉ. रमाकान्त, आदि ने चिंता व्यक्त की है।

निष्कर्ष

भिवानी जनपद का साहित्यिक संसार अपनी सांस्कृतिक, धार्मिक और वैचारिक विविधता के लिए जाना जाता है। इसे संतों, मनीषियों, तपस्वियों और उदार दानियों का नगर माना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह नगर बारह प्रमुख दरवाजों से घिरा हुआ था, जो उसकी नगररचना की विशिष्टता को दर्शाते हैं। यहाँ के अखाड़े, मठ, मंदिर और तालाब न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र रहे हैं, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के भी प्रतीक हैं।

भिवानी के लेखकों ने हिन्दी साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की है। यहाँ सरस्वती के ऐसे साधक जन्मे हैं, जिनकी लेखनी भाव, विचार और सौंदर्य से भरपूर रही है। साहित्यिक दृष्टि से यह भूमि अत्यंत उर्वर रही है, जहाँ पं. माधव प्रसाद मिश्र, श्री तुलसीराम शर्मा, दिनेश, डॉ. जयनाथ नलिन, श्री केहरि कृपाण, श्री बद्री सिंह तँवर, लोक कवि नन्दनलाल शर्मा, पं. सीताराम शास्त्री, मेलाराम मोड़ा, पं. नेकीराम शर्मा, जनकवि शंभुनाथ, डॉ. रमाकांत दीक्षित तथा डॉ. विश्वबन्धु शर्मा जैसे विद्वान साहित्यकारों ने अपने अमूल्य योगदान से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। इन रचनाकारों की साहित्यिक संपदा में भिवानी की सांस्कृतिक चेतना, लोकसंवेदना और भावनात्मक गहराई स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

संदर्भ ग्रंथ

1. एम. एल. गुप्ता, समाजशास्त्र, पृ० 279
2. डॉ० विद्या भूषण, समाज शास्त्र के सिद्धांत, पृ० 110
3. श्री कैलाशनाथ जेतली, समाज दर्शन, पृ0 24
4. डॉ० मनोज कुमार शर्मा, डॉ० उदयभानु हंस के साहित्य का सामाजिक एवं साँस्कृतिक अनुशीलन
5. डॉ० उदयभानु हंस रचनावली भाग–1, हिन्दी रूबाइयाँ पृ० 122
6. डॉ० अनिल गौड़, धरा के बोल, पृ० 98
7. पं० मदन गोपाल शास्त्री, कैसा हिन्दुस्तान है, पृ0 65
8. डॉ० उदयभानु हंस रचनावली भाग– 1 (अमृतकलश), पृ0 477
9. डॉ० उदयभानु हंस, दोहा सप्तशती, पृ० 15
10. डॉ० उदयभानु हंस रचनावली भाग–2 संत सिपाही, पृ0 66
11. डॉ0 सारस्वत मोहन मनीषी, बूँद–बूँद वेदना, पृ0 24
12. वहीं, पृ० 30
13. वहीं, पृ0 45
14. महाबीर प्रसाद मधुप श्रद्धांजलि, पृ०